खड–8, अंक–1, वर्ष–2020
D.O.I.: 10.22445/avspv8i1.27

वैज्ञानिक आलेख

भारत में शिक्षा क्षेत्र पर कोविड–19 का प्रभाव

सुभाष चंद्र श्रीवास्तव[1] एवं मुहम्मद अयूब अन्सारी[2]

[1]केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3, गुलाम गौस मार्ग, रेलवे कॉलोनी वैस्ट झाँसी– 284 003, उ.प्र., भारत
[2]रसायन विज्ञान विभाग, बिपिन बिहारी महाविद्यालय, झाँसी–284 003, उ.प्र., भारत

प्राप्ति तिथि–24.09.2020, स्वीकृति तिथि–16.11.2020

सार– कोविड–19 का प्रभाव दुनिया भर के सभी क्षेत्रों में फैला हुआ है। भारत के साथ–साथ दुनिया के शिक्षा क्षेत्र इससे बुरी तरह प्रभावित हैं। इसमें छात्रों के जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव डालने के लिए दुनिया भर में लॉकडाउन अनिवार्य है। लगभग 32 करोड़ छात्रों ने भारत में स्कूलों/कॉलेजों और सभी शैक्षणिक कार्यकलाप को स्थानांतरित करना बंद कर दिया है। शिक्षा क्षेत्र एक अलग दृष्टिकोण के साथ इस संकट से बचने के लिए लड़ रहा है और महामारी के खतरे को दूर करने के लिए अलग–अलग चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसमें सरकार द्वारा उठाए गए कुछ उपायों पर प्रकाश डाला गया है। इस लेख में सरकार द्वारा शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र में उठाए गए कुछ उपायों पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत लेख में, शिक्षा क्षेत्र पर कोविड–19 के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों पर चर्चा की गई है।

बीज शब्द– कोविड–19, भारत, शिक्षा क्षेत्र, भारत सरकार

Impact of Covid-19 on Education Sector in India

Subhash Chandra Shrivastava[1] and Mohd. Ayub Ansari[2]

[1]Kendriya Vidyalaya No 3, Gulam Gauss Marg, Railway Colony West Jhansi-284003, U.P., India
[2]Department of Chemistry, Bipin Bihari College, Jhansi-284003, U.P., India

Abstract- The impact of COVID-19 is observed in all sectors around the world. The education sectors of India as well as world are badly affected by this. It has compulsory the world wide lock down creating very bad effect on the students' life. Around 32 crore students stopped to move schools/colleges and all educational activities halted in India. The education sector has been fighting to survive the crises with a different method and digitising the challenges to wash away the threat of the pandemic. This highlights some measures taken by Govt. of India to provide seamless education in the country. Both positive and negative impacts of COVID-19 on education are discussed in the present article.

Key words- COVID-19, India, Education Sector, Govt. of India

1. परिचय

कोरोना वायरस वैश्विक महामारी पूरी दुनिया में फैल गया है एवं मानव समाज को सामाजिक दूरी बनाए रखना बहुत आवश्यक है। इसने शिक्षा क्षेत्र को महत्वपूर्ण रूप से बाधित किया है जो देश के आर्थिक भविष्य का महत्वपूर्ण निर्धारक है। भारत में, कोरोना वायरस का पहली बार 30 जनवरी 2020 को केरल में वुहान से लौटे एक छात्र में पता चला था। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने रोग के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं को समन्वित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय चिंता का एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया है।[1] 11 मार्च 2020 को, डब्ल्यू.एच.ओ. ने कोरोना वायरस रोग के फैलने की घोषणा एक महामारी के रूप में की और लोगों के जीवन को बचाने के लिए पता लगाने और संचरण को कम करने का इलाज किया। 12 मार्च, 2020 को भारत में कोरोना वायरस के कारण पहली मौत

Corresponding Author: kvs.shrivastava@gmail.com, drayub67@gmail.com

हुई। इसने दुनिया भर में 4.5 मिलियन से अधिक लोगों (डब्ल्यू.एच.ओ.) को प्रभावित किया है। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार, कोरोना वायरस अप्रैल 2020 के दौरान विश्व की कुल छात्र आबादी का 90% से अधिक प्रभावित किया था, जो अब जून 2020 के दौरान घटकर लगभग 67% रह गया है। कोरोना वायरस के प्रकोप ने 120 करोड़ से अधिक छात्रों और युवाओं को प्रभावित किया है। भारत में, विभिन्न प्रतिबंधों और कोरोना वायरस के लिए देशव्यापी लॉकडाउन से 32 करोड़ से अधिक छात्र प्रभावित हुए हैं। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 14 करोड़ प्राथमिक और 13 करोड़ माध्यमिक छात्र प्रभावित हुए हैं। कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के दौरान स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय सहित शिक्षा क्षेत्र बंद हो गए हैं। स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की प्रवेश परीक्षाओं सहित सभी कक्षाओं को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया। इस प्रकार, लॉकडाउन ने प्रत्येक छात्र के कार्यक्रम को नष्ट कर दिया है।

कोविड–19 के कारण सभी छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, कई बोर्ड बिना परीक्षा के ही बच्चों को अगली कक्षा के लिए प्रोमोट कर रहे हैं। ऐसे में अभिभावकों को बच्चों के भविष्य को लेकर काफी चिंता हो गई है। एक रिपोर्ट के अनुसार महामारी के कारण कई माता–पिता ऐसे हैं, जो एक साल तक बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते, वह उन्हें घर पर ही सुरक्षति रखना चाहते हैं। लॉकडाउन ने कई शैक्षणिक संस्थानों को अपनी कक्षाओं, परीक्षाओं, इंटर्नशिप आदि को निरस्त करने और ऑनलाइन मोड चुनने के लिए मजबूर किया है।[2] भारत सरकार ने शिक्षकों और छात्रों को ऑनलाइन के माध्यम से अपनी शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखने का आदेश दिया है। शिक्षकों ने इंटरनेट के माध्यम से छात्रों को पढ़ना शुरू किआ, विभिन्न वीडियो जैसे–जूम, गूगल मीट, फेसबुक, यूट्यूब और स्काइप आदि का उपयोग करके लाइव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से व्याख्यान दिया। संदेश देने के लिए अभिभावकों, शिक्षकों, छात्रों का व्हाट्सएप समूह बनाते हैं जिनके माध्यम से वे अपनी कठिनाइयों को साझा करने के लिए हमेशा संपर्क में रहते हैं।

कोरोना वायरस शरीर की कोशिकाओं से लेकर जीन तक को प्रभावित करते हैं। कोरोना संक्रमण का स्तर एंटीबॉडी टेस्ट की जगह टी–सेल्स (कोशिकाओं) की जांच से भी चल सकता है। हल्के लक्षण वाले कोरोना मरीजों में एंटीबॉडीज नहीं होती हैं लेकिन टी सेल इम्यूनिटी का स्तर अधिक होता है। इससे पता किया जा सकता है कि कौन सा व्यक्ति या किसी क्षेत्र की कितनी आबादी वायरस की चपेट में हैं। कोरोना वायरस से संक्रमित इंसान के कोशिकाओं को **चित्र–1** में दिखाया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक कोरोना वायरस की वैक्सीन को तैयार करने के लिए दुनिया भर में 170 से अधिक स्थानों पर कोशिश चल रही है।

भारत में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को देखकर अलग–अलग कंपनियां इसके इलाज के लिए वैक्सीन बनाने में लगी हैं। भारत में फार्मा कंपनी जायडस कैडिला ने अपनी संभावित कोविड–19 वैक्सीन जायसीओवी–डी (जायकोव–डी) का इंसानों पर ट्रायल शुरू कर दिया है। पहले चरण में कंपनी देश के विभिन्न हिस्सों में 1000 लोगों को इसके लिए इनरॉल करेगी। जायडस कोविड–19 की संभावित वैक्सीन के इंसानी ट्रायल के लिए मंजूरी पाने वाली दूसरी भारतीय फार्मा कंपनी है **(चित्र–2)**।

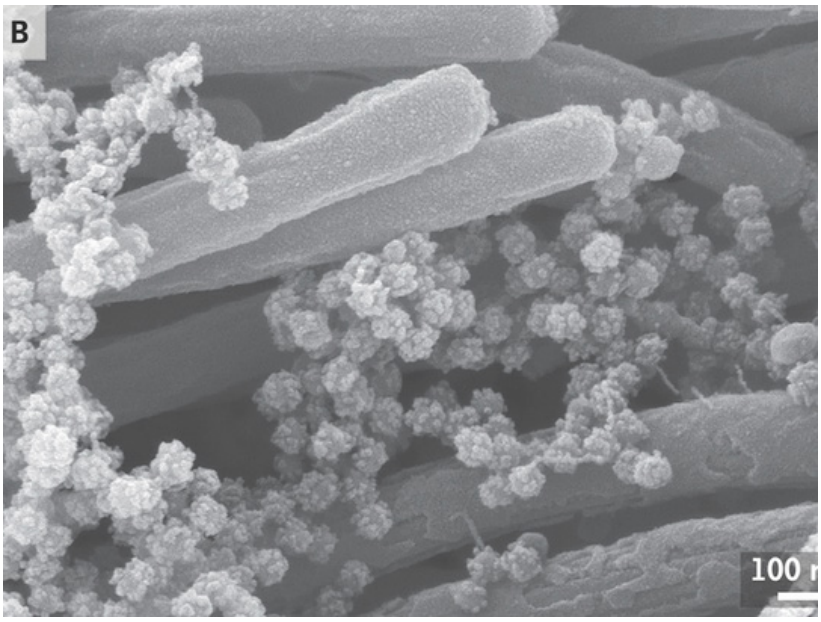

चित्र–1: कोरोना वायरस से संक्रमित इंसान की कोशिकाएं
[https://navbharattimes.indiatimes.com/world/science-news/us-scientists-publish-images-of-covid-19-infected-cells-in-human-body/articleshow/78100496.cms]

चित्र–2: कोरोना वैक्सीन
(https://www.bbc.com/hindi/science-53544229)

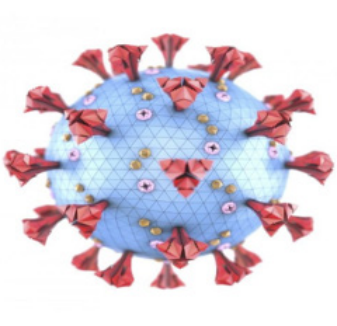

चित्र–3: कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण

2. अध्ययन का उद्देश्य

- भारत सरकार द्वारा कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के दौरान शिक्षा क्षेत्र में उठाए गए विभिन्न उपायों को समझना।
- शिक्षा क्षेत्र पर कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के विभिन्न सकारात्मक प्रभावों को उजागर करना।
- कोरोना वायरस के कुछ नकारात्मक प्रभावों को सूचीबद्ध करने और इस महामारी की स्थिति के दौरान सतत शिक्षा के लिए कुछ प्रभावी सुझाव देना।

3. क्रियाविधि

कोविड–19 महामारी पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा तैयार की गई विभिन्न रिपोर्टों से वर्तमान अध्ययन में प्रस्तुत डेटा और जानकारी एकत्र की जाती है। विभिन्न प्रामाणिक वेबसाइटों से जानकारी एकत्र की जाती है। शैक्षिक प्रणाली पर कोविड–19 के प्रभाव से संबंधित कुछ पत्रिकाओं और ई–सामग्री को संदर्भित किया जाता है।

3.1. महामारी कोविड–19 के दौरान शिक्षा क्षेत्र पर भारत सरकार की पहल

महामारी कोविड–19 के फैलने को रोकने के लिए, भारत सरकार ने कई निवारक उपाय किए हैं। संघ सरकार ने 16 मार्च 2020 को सभी शैक्षणिक संस्थानों का देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) ने 18 मार्च, 2020 को पूरे भारत में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सभी परीक्षाओं को स्थगित कर दिया। संघ लोक सेवा आयोग (यूपी.एस.सी.) ने सिविल सेवा परीक्षा 2011 के लिए साक्षात्कार को स्थगित कर दिया। इसी तरह अधिकांश राज्य सरकारों और अन्य शैक्षिक बोर्डों ने कोविड–19 के प्रकोप के कारण परीक्षाएँ स्थगित कर दीं। भारत सरकार ने 22 मार्च को एक दिवसीय राष्ट्रव्यापी जनता–कर्फ्यू मनाया है और 25 मार्च, 2020 से विभिन्न चरणों में लॉकडाउन लागू किया है। भारत सरकार समय–समय पर महामारी से लड़ने के लिए विभिन्न रणनीतियों को अपनाते हुए लॉकडाउन की अवधि बढ़ा रहा है, लेकिन शैक्षणिक संस्थान लगातार बंद रखने का आदेश दिया है। 29 जून को लॉकडाउन 6.0 घोषित किया गया था, जो शिक्षा को छोड़कर अन्य क्षेत्रों में कुछ कम प्रतिबंध के साथ 1 जुलाई से 31 जुलाई 2020 तक प्रभावी है। लगभग सभी राज्य सरकार के मंत्रालयों ने स्कूलों की कक्षाओं को ऑनलाइन रखने का निर्देश दिया है। कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण (**चित्र–3**) सबसे अच्छा समाधान है।[3] मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी.)[4] ने कई व्यवस्थाएँ की हैं, जिसमें छात्रों को सीखने के लिए सीधे होम टीवी, रेडियो के माध्यम से ऑनलाइन पोर्टल और शैक्षिक चैनल शामिल हैं। लॉकडाउन के दौरान, छात्र ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली के लिए लोकप्रिय सोशल मीडिया टूल जैसे व्हाट्सएप, जूम, गूगल मीट, टेलीग्राम, यूट्यूब लाइव, फेसबुक लाइव आदि का उपयोग कर रहे हैं।

3.2. शिक्षा क्षेत्र पर कोविड–19 का सकारात्मक प्रभाव

कोविड–19 का सकारात्मक प्रभाव शिक्षा क्षेत्र में निम्न प्रकार है–

3.2.1. *शिक्षण प्रबंधन प्रणाली के उपयोग में वृद्धि*

शिक्षण संस्थानों द्वारा शिक्षण प्रबंधन प्रणालियों का उपयोग एक बड़ी मांग बन गया हैं। इसने उन कंपनियों के लिए एक शानदार अवसर मिला, जो शिक्षण संस्थानों के उपयोग के लिए शिक्षण प्रबंधन प्रणालियों को विकसित और मजबूत कर रहे हैं।[5]

3.2.2. *शिक्षण सामग्री की सॉफ्ट कॉपी का उपयोग बढ़ाएँ*

लॉकडाउन स्थिति में छात्र अध्ययन सामग्री की हार्ड कॉपी एकत्र करने में सक्षम नहीं है और इसलिए अधिकांश छात्र संदर्भ के लिए सॉफ्ट कॉपी सामग्रियों का उपयोग करते है।

3.2.3. *सहयोगी कार्यों में सुधार*

यह एक नया अवसर है जहाँ सहयोगी शिक्षण और शिक्षक नए रूपों को अपना सकते हैं। दुनिया भर के फैकल्टी/अध्यापक के बीच एक–दूसरे को फायदा पहुँचाने के लिए सहयोग भी हो सकता है।[5]

3.2.4. *ऑनलाइन बैठकों में वृद्धि*

इस महामारी ने टेलीकांफ्रेंसिंग, आभासी बैठकों, वेबिनार और ई–कॉन्फ्रेंसिंग के अवसरों में भारी वृद्धि की है।

3.2.5. *संवर्धित डिजिटल साक्षरता*

महामारी की स्थिति ने लोगों को डिजिटल तकनीक सीखने और उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित किया और परिणामस्वरूप डिजिटल साक्षरता बढ़ी है।

3.3. शिक्षा क्षेत्र पर कोविड–19 का नकारात्मक प्रभाव

कोविड–19 के प्रकोप से शिक्षा क्षेत्र को बहुत नुकसान हुआ है। इसने शिक्षा पर कई नकारात्मक प्रभाव पैदा किए हैं और उनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं।

3.3.1. *शैक्षिक गतिविधियों में बाधा*

कक्षाएँ स्थगित कर दी गई हैं और विभिन्न स्तरों पर परीक्षाएँ भी स्थगित कर दी गई हैं। विभिन्न बोर्ड पहले ही वार्षिक परीक्षाओं और प्रवेश परीक्षाओं को स्थगित कर चुके हैं। एडमिशन प्रक्रिया में देरी हुई। लॉकडाउन में निरंतरता के कारण, छात्र को 2020–21 के पूर्ण शैक्षणिक वर्ष के लगभग 3 महीने का नुकसान हुआ हैं, जो शिक्षा में निरंतरता की स्थिति को और खराब करने वाला है और छात्रों को एक विशाल के बाद फिर से स्कूली शिक्षा को फिर से शुरू करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

3.3.2. *रोजगार पर प्रभाव*

कोविड–19 के कारण अधिकांश भर्ती स्थगित हो गई, छात्रों के बोर्ड में देरी करने वाली कंपनियों के साथ छात्रों के लिए प्लेसमेंट भी प्रभावित हो सकते हैं। इस महामारी के कारण बेरोजगारी दर में वृद्धि होने की उम्मीद है। भारत में, सरकार के पास कोई भर्ती नहीं है। मार्च के मध्य में बेरोजगारी पर भारतीय अर्थव्यवस्था के अनुमानों की निगरानी के लिए केंद्र ने अप्रैल की शुरुआत में 8.4% से 23% तक और शहरी बेरोजगारी दर को 30.9% तक बढ़ा दिया।[6] जब बेरोजगारी बढ़ती है तो शिक्षा धीरे–धीरे कम हो जाती है क्योंकि लोग शिक्षा के बजाय भोजन के लिए संघर्ष करते हैं।

3.3.3. *अनपढ़ शिक्षकों/छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा देना*

सभी शिक्षक/छात्र इसमें अच्छे नहीं होते हैं या कम से कम ये सभी आमने–सामने सीखने से लेकर ऑनलाइन सीखने तक के लिए तैयार नहीं थे।

3.3.4. *स्कूलों का भुगतान, कॉलेजों की फीस में देरी*

इस लॉकडाउन के दौरान अधिकांश माता–पिता बेरोजगारी की स्थिति का सामना कर रहे होंगे, इसलिए वे उस विशेष समय अवधि के लिए शुल्क का भुगतान करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं जो निजी संस्थानों को प्रभावित कर सकते हैं।

4. सुझाव

1. भारत को यह सुनिश्चित करने के लिए रचनात्मक रणनीति विकसित करनी चाहिए कि सभी बच्चों को महामारी कोविड–19 के दौरान सीखने की सतत् पहुँच होनी चाहिए। भारतीय नीतियों में विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न लोगों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
2. नौकरी अवसर, इंटर्नशिप प्रोग्राम और रिसर्च प्रोजेक्ट्स पर महामारी के प्रभावों को कम करने के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता होती है।

3. कई ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म एक ही विषय पर विभिन्न स्तरों के प्रमाणपत्र, कार्यप्रणाली और मूल्यांकन मापदंडों के साथ कई कार्यक्रम पेश करते हैं। इसलिए, विभिन्न ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्मों में कार्यक्रमों की गुणवत्ता भिन्न हो सकती है।
4. सरकार और शैक्षिक संस्थानों को सामाजिक दूरी बनाए रखने वाली शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखने की योजना बनानी चाहिए।

5. निष्कर्ष

कोविड–19 ने भारत के शिक्षा क्षेत्र को अत्यधिक प्रभावित किया है। हालांकि इसने कई चुनौतियाँ पैदा की हैं, विभिन्न अवसर भी विकसित हुए हैं। भारतीय सरकार और शिक्षा के विभिन्न हितधारकों ने कोविड–19 के वर्तमान संकट से निपटने के लिए विभिन्न डिजिटल तकनीकों को अपनाकर ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (ओ.डी.एल.) की संभावना का पता लगाया है। भारत डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से शिक्षा को राष्ट्र के सभी कोनों तक पहुँचाने की कोशिश जारी है। विश्वविद्यालय और भारत सरकार इस समस्या के समाधान के लिए अधिक प्रयास कर रहे हैं। यहाँ तक कि अगर कोविड–19 संकट लंबे समय तक फैला रहता है, या जब तक वैक्सीन नहीं आयी तब तक ऑनलाइन प्लेटफार्मों के अधिकतम उपयोग पर प्रयास करने की तत्काल आवश्यकता है ताकि छात्र इस शैक्षणिक वर्ष में न केवल अपनी डिग्री पूरी करें बल्कि भविष्य के डिजिटल उन्मुख वातावरण के लिए तैयार हो सकें। कोविड–19 के फैलने को कम करने के लिए ''घर से काम'' की अवधारणा ऐसी महामारी की स्थिति में अधिक प्रासंगिक है। भारत को यह सुनिश्चित करने के लिए रचनात्मक रणनीति विकसित करनी चाहिए कि सभी बच्चों को महामारी कोविड–19 के दौरान सीखने की सतत पहुँच होनी चाहिए। जैसा कि ऑनलाइन अभ्यास छात्रों को अत्यधिक लाभ पहुँचा रहा है, इसे लॉकडाउन के बाद भी जारी रखा जाना चाहिए। भारत की शिक्षा प्रणाली पर कोविड–19 के प्रभाव का पता लगाने के लिए आगे विस्तृत सांख्यिकीय अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ

1. डब्ल्यूएचओ (2020) डब्ल्यूएचओ कोरोना वायरस (कोविड–19) डैशबोर्ड, भारत में कोविड–19 महामारी https://en.wikipedia.org/wiki/Education_in_India
2. जेना, प्रवर कु0 (2020) ओ0डी0एल के लिए कोविड–19 द्वारा बनाई गई चुनौतियां और अवसरः इग्नू का एक केस अध्ययन, बहु–विषयक दायर में नवीन अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खण्ड–6, अंक–5, मु0पृ0 217–222।
3. जेना, प्रवर कु0 (2020) भारत में कोविड–19 के लिए लॉकडाउन अवधि के दौरान ऑनलाइन शिक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, खंड–9, अंक–5(8), मु0पृ0 82–92।
4. एम.एच.आर.डी. नोटिस (2020), कोविड–19 से सुरक्षित रहेंः डिजिटल पहल, https://www.mohfw.gov.in/pdf/Covid19.pdf
5. कमलेश (2020) कोविड–19:4 नकारात्मक प्रभाव और शिक्षा के लिए बनाए गए 4 अवसर, https://www.indiatoday.in/educationtoday/featurephilia/story/covid-19-4-negative-impactsand-4-opportunities-created-for-education-1677206- 2020-05-12
6. Educationasia.in (2020) शिक्षा और शिक्षा क्षेत्र पर कोविड–19 का प्रभाव https://educationasia.in/article/the-impactof-covid-19-on-education-and-education-sectors-knowhere